आदर्श चरित्र

बच्चे जो भय से झुके नहीं (बालिकाएं)

आदर्श चरित्र पुस्तक माला

बच्चे जो भय से झुके नहीं
(बालिकाएँ)

अदिति महेश

वाणी प्रकाशन
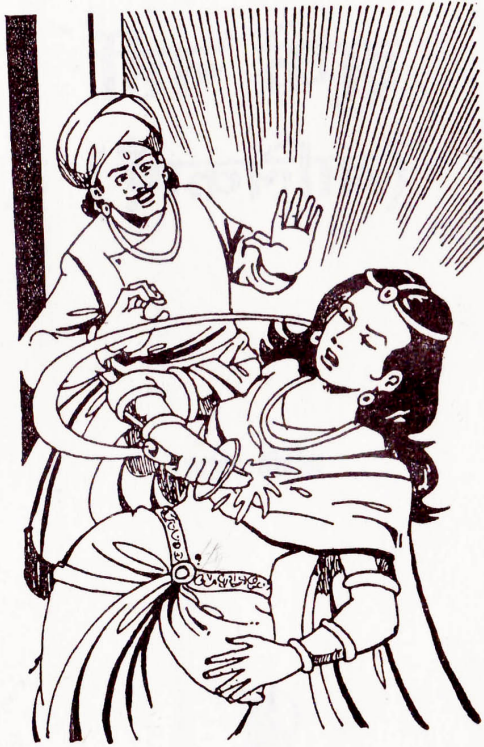
मूल्य : 30.00 संस्करण : 2011

विद्युल्लता

बात उस समय की है, जब अलाउद्दीन ने चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी को पाने के लिये चित्तौड़ पर दूसरी बार बहुत बड़ी सेना के साथ आक्रमण किया था। पहली बार वह पराजित होकर लौट गया। इस दूसरी बार का उसका आक्रमण बड़ी भारी तैयारी से हुआ था। अन्त में इसी आक्रमण में चित्तौड़ के वीर राजपूत केसरिया वस्त्र पहनकर युद्ध में मारे गये और महारानी पद्मिनी तथा दूसरी राजपूत स्त्रियाँ चिता बनाकर उसमें अपने सतीत्व की रक्षा के जीवित ही जल गयी थीं।

चित्तौड़ के एक सरदार की कन्या का नाम विद्युल्लता था। उसकी सगाई समर सिंह नाम के एक राजपूत सरदार से हुई थी। दोनों के विवाह की तैयारी हो ही रही थी कि चित्तौड़

पर अलाउद्दीन ने आक्रमण कर दिया। समर सिंह को अपने देश की रक्षा के लिये युद्ध में जाना पड़ा। विद्युल्लता उन दिनों प्रायः एकान्त में रहती और अपने भावी पति का चिन्तन किया करती थी।

एक दिन चाँदनी रात में समर सिंह विद्युल्लता के घर आया और अकेले में उससे मिलकर बोला—'मुझे तो ऐसा लगता है कि अब थोड़े दिनों में ही चित्तौड़ मुसलमानों के हाथ में चला जाएगा। मुसलमान सैनिक बहुत अधिक हैं, इसलिये राजपूतों को अन्त में हारना ही पड़ेगा। ऐसी अवस्था में मैं चाहता हूँ कि हम-तुम चित्तौड़ से कहीं दूर भाग चलें।'

पहले तो विद्युल्लता की समझ में ही बात नहीं आयी कि समर सिंह ऐसी बात क्यों कहता है, किंतु जब समर सिंह ने बताया कि वह विद्युल्लता के मोह के कारण ही युद्ध से भागकर आया है, तब विद्युल्लता गरज उठी—'तुम क्या सोचते हो कि तुम्हारे-जैसे कायर से मैं विवाह कर लूँगी? कोई राजपूत-कुमारी किसी

युद्ध से भागने वाले कायर पर थूकना भी नहीं चाहेगी। तुम्हें मेरा हाथ पकड़ना है तो युद्ध में जाकर अपनी वीरता दिखलाओ। युद्ध में तुम मारे गये तो सती होकर स्वर्ग में मैं तुमसे मिलूँगी।'

विद्युल्लता समर सिंह को फटकारकर अपने घर चली गयी। समरसिंह निराश होकर लौट पड़ा। वह अलाउद्दीन की सेना को देखकर डर गया था। विद्युल्लता की सुन्दरता पर वह मोहित हो गया था और इसीलिये मरने से उसे डर लगता था। उसने समझ लिया कि युद्ध समाप्त होने पर ही विद्युल्लता उसे मिल सकती है। मोह के वश होकर वह शत्रुओं से मिल गया। जब अलाउद्दीन ने चित्तौड़ जीत लिया तो सैकड़ों मुसलमान सैनिकों के साथ समर सिंह विद्युल्लता से मिलने चला।

विद्युल्लता ने जब समर सिंह को आते देखा तो हैरान रह गयी। मुसलमान सैनिकों के साथ उसे आते देखकर वह समझ गयी कि समर सिंह देशद्रोही है। पास पहुँचकर समर

सिंह ने विद्युल्लता का हाथ पकड़ना चाहा; किंतु वह पीछे हट गयी और डाँटकर बोली–'तू अधम देशद्रोही है। मेरे शरीर को छूकर मुझे अपवित्र मत कर। शत्रुओं से मिलकर मेरे पास आते तुझे लज्जा नहीं आयी? जा, कहीं दो चुल्लू पानी में डूब मर। विश्वासघाती कायरों के लिये यहाँ स्थान नहीं है।'

समर सिंह विजय के घमंड में था। वह विद्युल्लता को पकड़ने आगे बढ़ा, लेकिन विद्युल्लता ने झटसे अपनी कटार खींच ली और अपनी छाती पर दे मारी। समर सिंह उसे पकड़ सके इसके पहले तो वह पवित्र राजपूत–बालिका शरीर छोड़कर देवताओं के दिव्य लोक में चली गयी थी।

समर सिंह हाथ लगा केवल उसका प्राणहीन शरीर और देश से विश्वासघात करने का कलंक लगा बैठा।
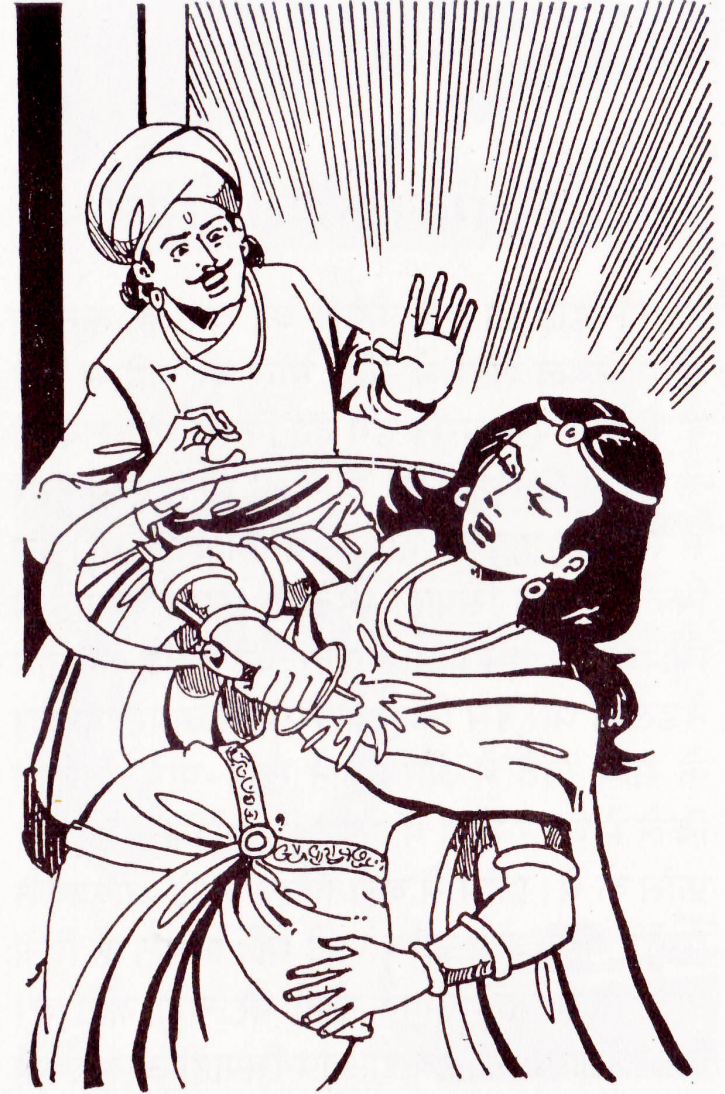
वीर बालिका मेडलीन

दो-डाई सौ वर्ष पहली की बात है, कनाडा के मॉँट्रियल शहर से बीस मील दूर लारेन्स नदी के किनारे एक पुराने ढंग का किला था। लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठों को खूँटों की भाँति एक-दूसरे से सटाकर गाड़कर दीवालें बनायी गयी थीं। इस किले में बीस सिपाही रहते थे। उसके नायक थे मि॰ वर्चर। इन्ही मि॰ वर्चर की पुत्री का नाम मेडलीन था। इस किले के सिपाही अपने परिवार के साथ रहते थे और अपने खाने-पीने के लिये किले से बाहर खेती भी करते थे; क्योंकि ये सिपाही फ्रांस के थे। फ्रांस से वहाँ गल्ला आदि आवश्यक वस्तुएँ बहुत कम पहुँच पाती थीं। फसल के दिनों में सभी सिपाही अपने खेतों पर चले जाते थे। किले में पहरे के लिये दो-चार सिपाही और स्त्रियाँ रह जाती थीं।

एक दिन फसल के समय किले में केवल दो सिपाहियों को छोड़कर मि॰ वर्चर दूसरे सिपाहियों के साथ खेतपर चले गये और वहाँ सब लोग निश्चिन्त होकर फसल काटने लगे। इतने में ही हरोकी नाम की एक जंगली जाति के लुटेरों ने उन लोगों पर आक्रमण कर दिया। 'किले में चलो' की आज्ञा मि॰ वर्चर ने अपने सिपाहियों को दी सही, किंतु तब तक लुटेरों ने उन लोगों को घेर लिया था। थोड़ी ही देर के युद्ध के बाद सब लोगों को हरोकी लुटेरों ने बाँध लिया।

मेडलीन भी उस समय किले से बाहर घूमने निकली थी। अपने पिता का 'किले में चलो' पुकारना उसने सुन लिया और लुटेरों का आक्रमण दूर से देखा। उसने यह भी देख लिया कि लुटेरों ने उसके पिता तथा उनके साथियों को बाँध लिया है। वह दौड़ी हुई किले में आयी। किले का फाटक उसने बंद करा दिया। किले के दोनों सिपाहियों ने जब सुना कि लुटेरों ने उनके नायक तथा साथियों को बाँध लिया है तो वे निराश हो गये और कहने लगे—'किले के बारूद के भण्डार में आग लगा दो। किले को उड़ा दो। हम सब

लोग इस प्रकार मर जाएँ, नहीं तो लुटेरे बहुत कष्ट देकर हमें मारेंगे।'

मेडलीन उस समय केवल चौदह वर्ष की बालिका थी; किंतु वह घबरायी नहीं। उसने दोनों सिपाहियों को उनकी कायरता के लिये धिक्कारा और समझाया। अन्त में वे उसकी बात मानने को तैयार हो गये। बालिका मेडलीन किले की सेनापति बन गयी। उसने किले में जो स्थान कमजोर थे, उनको ठीक कराया। स्त्रियों को बंदूकें देकर जहाँ-तहाँ खड़ा किया।

लुटेरों ने समझा था कि किले में अब केवल स्त्रियाँ होंगी। वे किले को लूटना बहुत सीधा काम समझे हुए थे। लेकिन जब वे किले के पास पहुँचे तो किले से बंदूकों ने आग उगलना आरम्भ कर दिया। कई लुटेरे गोली खाकर लुढ़क गये। दूसरे भागकर दूर जा छिपे। मेडलीन ने देखा कि एक तोप भी किले में है। उसने तोप को साफ करके उसमें गोला-बारूद भरा और एक बार दाग दी। तोप का शब्द सुनकर लुटेरे आस-पास के जंगलों में भागकर छिप गये।
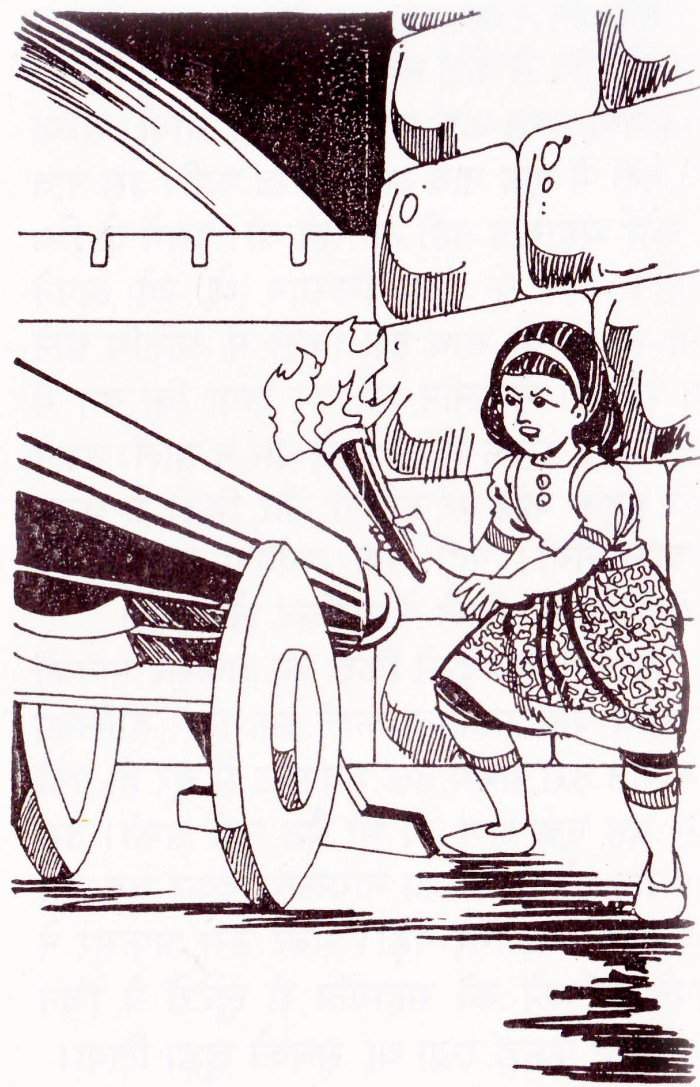
मेडलीन ने सोचा था कि तोप का शब्द सुनकर पास के गाँव से कोई सहायता आ जाएगी। दिनभर बीत गया, परंतु कोई सहायता नहीं आयी। संध्या को नदी में एक नाव आती दीख पड़ी। इस नाव में कोई सहायता नहीं आ रही थी। इसमें तो मि० फातेन नाम के एक किसान थे, जो अपने स्त्री-बच्चों के साथ इस किले में अतिथि होने आ रहे थे। मेडलीन को डर लगा कि वन में छिपे लुटेरे उसके अतिथि को मार न डालें। उसने भरी बंदूक कंधे पर उठायी और किले से बाहर निकल गयी। नदी तक अकेली जाकर वह अतिथियों को किले में सुरक्षित ले आयी।

रात को एक दूसरे किले का अफसर सैनिकों के साथ वहाँ सहायता करने आ गया। बालिका मेडलीन उस समय तक थकावट से चूर हो गयी थी। वह एक क्षण को भी बैठ नहीं सकी। उस अफसर को किले का नायकत्व देकर तब वह एक कुर्सी पर गिर पड़ी। सबेरे उस अफसर ने अपने सैनिकों की सहायता से लुटेरों ने जिन लोगों को पकड़ रखा था, सबको छुड़ा लिया।

मुद्रक : बालाजी आफसैट, दिल्ली-110032

9788181432575

वाक
पेपरबैक पुस्तकें
नई दिल्ली-110002

वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली-110002

आग की गेंद

हबीब तनवीर

आग की गेंद

हबीब तनवीर

वाणी प्रकाशन
नयी दिल्ली-110002

वाणी प्रकाशन

ISBN : 81-8143-257-6

21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

संस्करण 2012
मूल्य : ₹ 30

त्रिवेणी ऑफसेट, शाहदरा
द्वारा मुद्रित

AAG KI GEND
by Habib Tanvir

पात्र

अलिफ, बे, जीम

समय : सूरज निकलने से पहले

खेल की अवधि : पाँच मिनट

स्थान : ज़मीन

जीम : बतलाओ कौन-सी कहानी सुनाऊँ?

अलिफ : सितारों की कहानी!

जीम : अच्छा तो सुनो—हमारी ज़मीन सितारों से छोटी है!

बे : कैसे हो सकता है?

जीम : बात यह है कि सितारे इतनी दूर हैं कि छोटे नज़र आते हैं!

बे : मगर हमको कैसे मालूम हो कि हमारी ज़मीन सितारों से छोटी है?

जीम : अच्छा सूरज हमारी ज़मीन से बहुत बड़ा है--यह तो हमें मालूम है ना?

अलिफ : तो सूरज सितारा थोड़ी है?

बे : सूरज है क्या चीज़?

अलिफ : सूरज सूरज है और क्या!

जीम : सूरज भी एक सितारा है!

बे : और हमारी ज़मीन भी सितारा है?

जीम : हमारी ज़मीन सितारा नहीं सय्यारा है!

अलिफ : सितारे और सय्यारे में क्या फ़र्क़ होता है?

बे : सितारे में नुकते ऊपर होते हैं और सय्यारा में नीचे बस।

जीम : सय्यारा गरम नहीं होता सितारा गरम होता है—सय्यारा सितारे की रोशनी से तो आईने की तरह चमक सकता है मगर जिस तरह आईना खुद अपनी रोशनी से नहीं

चमकता सय्यारा भी नहीं चमक सकता और सितारा इतना गरम होता है कि खुद रोशनी पैदा करता है—सय्यारे सूरज के गिर्द चक्कर लगाते हैं सितारे नहीं लगाते।

बे : सूरज की रोशनी न हो तो कितना बुरा लगेगा।

जीम : सूरज की रोशनी न हो तो न हम ज़िंदा रह सकते हैं न जानवर न पेड़ न फल—सूरज न हो पानी-हवा-बिजली-तेल-कोयला कुछ भी न हो—सूरज ही से तो ज़िंदगी है—कहो तो इसी सितारे की कहानी सुनाएँ?

बे : हाँ सूरज की कहानी सुनाइए!

जीम : सूरज की बहुत-सी पुरानी कहाँनियाँ हैं। यूनान की अलग. ..हिंदोस्तान की अलग। अमरीका की अलग। अफ़्रीका की अलग।

बे : सच्ची कहानी सुनाइएगा!

जीम : एक कहानी बड़ी मजेदार है...पुराने जमाने में दुनिया के दो हिस्से थे। एक हिस्से में पहाड़ थे और दूसरे हिस्से में वादी।

अलिफ : वादी मैदान को कहते हैं न?

बे : फिर वही उल्टी बात! मैदान को बस मैदान कहते हैं। वादी दो पहाड़ों के बीच में होती है। अच्छा तो पहाड़ी हिस्से के लोगों के पास आग थी और वादीवाले आग का नाम भी नहीं जानते थे। अच्छा बताओ, पहाड़ वांला कौन बनेगा?

बे : मैं!

अलिफ : मैं!

जीम : झगड़ा खत्म! पहाड़वाला मैं। तुम दोनों वादीवाले।

(जीम एक सुर्ख-सी दहकती हुई गेंद लेकर स्टेज के दाएँ तरफ बैठ जाता है। और आग तापता है। अलिफ और बे बाएँ तरफ़ बैठ जाते हैं।)

अलिफ : कितनी सर्दी लग रही है!

बे : देखो! वह कैसे मज़े से आग ताप रहे हैं!

अलिफ : कितनी खूबसूरत है वह गेंद!

बे : वह आग की गेंद है।

अलिफ : आग की गेंद?

बे : इसी आग से तो वह लोग तरह-तरह के खाने पकाकर खाते हैं।

अलिफ : और हम जंगल के फल और पत्ते खाकर ज़िंदगी बसर करते हैं।

बे : इसी आग से वह लोग रात के अँधेरे को दूर-दूर तक भगा देते हैं।

अलिफ : हमें भी किसी तरह आग पैदा करनी चाहिए।

बे : जुगनुओं में होती है। बहुत से जुगनू पकड़ लें। बस आग जमा हो जाएगी!

अलिफ : आसमान के सितारे तोड़ लाएँ तो क्या मज़ा आए?

बे : सितारों ही से तो थोड़ी रोशनी है। वह तोड़ लेंगे तो कुछ भी नज़र न आएगा!

अलिफ : क्यों? फिर तो और रोशनी हो जाएगी! अभी ये सितारे आसमान पर चमकते हैं—फिर ज़मीन पर जगमगाएँगे!

बे : और यह रात ख़त्म हो जाएगी, है न?

अलिफ : हज़ारों साल हो गए। यह रात ख़त्म ही नहीं हुई!

बे : तो फिर आओ—चलें आसमान की तरफ़। खूब से सितारे तोड़ कर ले आएँगे!

अलिफ : लाएँगे काहे में!

बे : दामन में भर लेंगे!

अलिफ : अच्छा,—एक सीढ़ी लेकर आओ!

बे : मेरी सीढ़ी ज़रा छोटी है। बड़ी बनानी पड़ेगी!

अलिफ : अरे! मैं तो भूल ही गया था। तुम्हारी सीढ़ी तो बहुत छोटी होगी। हमको तो बहुत बड़ी, बहुत ही लंबी सीढ़ी की ज़रूरत है। अरे भई...सितारों तक पहुँचने वाली सीढ़ी बनाने में तो सैकड़ों बरस लग जाएँगे। हम अपनी ज़िंदगी में बना पाएँगे?

बे : अच्छा, तो इनसे क्यों न माँग लें गेंद?

अलिफ : एक ही तो आग की गेंद है इनके पास। तुम्हें भला क्यों देने लगे?

बे : माँग कर देखें।

अलिफ : साहब...यह आग की गेंद हमें दे दीजिए।

जीम : तुम्हें क्यों दूँ? बड़े आए माँगने वाले!

बे : मैं न कहता था नहीं देंगे!

अलिफ : अच्छा साहब! खफा क्यों होते हैं? नहीं देते तो मत दीजिए।

बे : आपकी गेंद आपको मुबारक हो।

अलिफ : हम तो थोड़ी देर खेलना चाहते थे। बस फिर वापस कर देते। नहीं देते तो हम कोई और खेल खेलेंगे।

जीम : आग से खेलना अच्छा नहीं होता।

अलिफ : मुझे एक बात सूझी।

बे : क्या बात?

अलिफ : ठहरो! *(जेब से एक बाँसुरी निकालता है और बजाता हुआ जीम के पास जाता है। बाँसुरी की आवाज़ से जीम सो जाता है। अलिफ आग की गेंद चुरा लेता है और तिनकों में छिपाकर बे के पास ले आता है।)*...देखो! ले आया गेंद!

बे : देखें कैसी है?

(बे बढ़कर तिनके हटाना चाहता है)

अलिफ : *(इसे रोकते हुए)* खोलो मत!

बे : क्यों?

अलिफ : ऐसी!

बे : ज़रा देखने तो दो।

अलिफ : गेंद मेरी है। मैं नहीं देखने दूँगा।

बे : गेंद हम दोनों की है।

जीम : *(झगड़े से जाग उठता है)* किसने चुराई मेरी गेंद?

अलिफ : गेंद तुम्हारी कैसे हुई? जिसने उठा ली उसकी हो गई।

बे : गेंद हम तीनों की है।

जीम : गेंद मेरे सिवा और किसी की नहीं हो सकती। वापस दे दो मेरी गेंद।

बे : जरा देखने तो दो। आखिर है कैसी यह गेंद?

अलिफ : मैं कहे दे रहा हूँ गेंद पर से तिनके मत हटाना। वर्ना.

(बे गेंद अलिफ के हाथ से छीनकर तिनके हटा देता है। तिनके हटते ही आग की गेंद ऊपर चली जाती है। आसमान पर पहुँच कर सूरज की तरह चमकने लगती

है। सारी दुनिया मुनव्वर हो जाती है)

अलिफ : मैं न कहता था। अब क्या करोगे? तिनके हटाते ही गेंद आसमान पर उड़ गई। अब न तुम्हारी है, न मेरी, न इनकी। बस अब यह आग की गेंद सारी दुनिया की हो गई।

बे : मग़र देखो इसकी रोशनी कितनी तेज है। सारी दुनिया जगमगा उठी।

जीम : बस अब यह गेंद सूरज बन गई। अब यह कभी ज़मीन पर नहीं उतरेगी।

अलिफ : सच!

जीम : सूरज को आग की एक गेंद समझो...और क्या?

बे : इसमें सचमुच आग होती है?

जीम : आग तो नहीं होती...मगर सूरज इतना गरम होता है कि दूर-दूर तक इसकी रोशनी फैल जाती है।

बे : तो यह कहानी सच्ची नहीं है?

जीम : कहानी है। सच झूठ किसे मालूम!

बे : *(रूठकर)* हमें झूठी कहानी सुनाई!

अलिफ : सच्ची कहानी क्यों नहीं सुनाते हैं?

जीम : सूरज के बारे में कोई कहानी सच्ची नहीं।

बे : क्यों?

जीम : कोई जानता ही नहीं सूरज कैसे बना।

अलिफ : *(मचलकर)* नहीं...बताइए न, बताइए न! सूरज कैसे बना बताइए न!

बे : आपको बताना पड़ेगा सूरज क्या है?

जीम : कह तो दिया सूरज एक सितारा है जिसके गिर्द नौ सय्यारे

चक्कर लगाते हैं। एक हमारी ज़मीन और...*(कुछ सोच कर)* दूसरे आठ सय्यारों के नाम बताओ...कौन-कौन से हैं?

अलिफ : नहीं मालूम।

जीम : तुम सय्यारों के नाम बताओ। तो मैं सूरज की दूसरी कहानी सुनाऊँगा।

बे : कहाँ से बताएँ?

जीम : मालूम करके आओ।

अलिफ : कहाँ से मालूम करें?

जीम : किताब में देखकर आओ।

अलिफ : अच्छा हम देखकर आते हैं।

बे : आप कहीं न जाइएगा। हम अभी आते हैं। सूरज की दूसरी कहानी जरूर सुनानी पड़ेगी।

जीम : नाम जुबानी याद करके आओगे तो सुनाऊँगा। *(अलिफ और बे भागकर निकल जाते हैं। जीम बढ़कर स्टेज के सामने आता है और तमाशा देखने वालों से कहता है).* ..अब आप ही बताइए कि जब तक ये बच्चे नौ सय्यारों के नाम याद नहीं कर लेते मैं दूसरी कहानी कैसे सुना सकता हूँ। इसलिए मेरे ख़्याल से अब पर्दा खींच देना चाहिए। क्यों? *(अपने हाथ से पर्दा खींच देता है।)*

1944 में नागपुर विश्वविद्यालय से स्नातक-उपाधि प्राप्त करने के बाद हबीब तनवीर ने 1955-56 में ब्रिटेन की 'राडा' ('रॉयल एकेडेमी ऑफ़ ड्रामाटिक आर्ट्स') में अभिनय तथा एक वर्ष बाद वहीं के 'ब्रिस्टल ओल्ड विक थिएटर स्कूल' से नाट्य-निर्मिति का अध्ययन किया। 1954 में वे दिल्ली में पहले पेशेवर नाट्यमंच की स्थापना कर चुके थे और 1959 में उन्होंने 'नया थिएटर' के नाम से एक अन्य नाट्यमंच की शुरूआत की। नाटककार, कवि, पत्रकार, नाट्य-निदेशक तथा मंच-अभिनेता होने के साथ-साथ वे कई फ़िल्मों और टी वी धारावाहिकों में काम कर चुके हैं। हबीब तनवीर के ढेरों पुरस्कार और सम्मान मिले हैं, उन्हें पद्मश्री, संगीत नाट्क अकादेमी पुरस्कार, शिखर सम्मान, विश्वविद्यालय से मानद डी. लिट्., कालिदास सम्मान, उर्दू अकादेमी नाट्य पुरस्कार, साहित्य कला परिषद नाट्य पुरस्कार आदि प्रदान किए गए हैं। वे रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर में अतिथि प्राध्यापक, संगीत नाट्क अकादेमी के फ़ैलो, साहित्य अकादेमी की कार्यकारिणी के सदस्य तथा नेहरू फ़ैलोशिप के प्राप्तकर्ता भी रहे हैं। उनके विख्यात नाटकों में 'आगरा बाज़ार', 'चरन दास चोर', 'देख रहे हैं नैन' और 'हिरमा की अमर कहानी' सम्मिलित हैं। उन्होंने 'बसंत ऋतु का सपना' के अलावा 'शाजापुर की शांति वाई', 'मिट्टी की गाड़ी' तथा 'मुद्राराक्षस' शीर्षकों से देशी-विदेशी नाटकों का आधुनिक रूपातंर किया है। हबीब तनवीर के नाटकों को अनेक पुरस्कार मिले हैं जिनमें 1982 के एदिनबरा अंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह का 'फ्रिज फ़र्स्ट्स' पुरस्कार भी शामिल है।